ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I | ISSUE-III | AUG | 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

मन्नु भण्डारी की कहानियोंमें चित्रित नारी समस्याएँ

संशोधन विद्यार्थीनी

डॉ. उत्तमा अण्णाराव नेळगे

.....

मन्नु भण्डारी हिन्दी की महिला कहानीकारोंमें अग्रणी कलाकार है । उनके व्यक्तित्व में नारी के मन मे बैठनेकी अद्‌भूत क्षमता है । वे समकालीन कथा साहित्य में नारी जीवन की अन्तर्मूखी स्थितियों और परिवेशगत विद्रुपताओं को उभारने और अंकत करने में अप्रतिम स्थान रखती है । मन्नू भण्डारी की कहानियोंमें तनाव आधुनिकता की विसंगतियों से बुना हुआ है । उनकी सभी कहानियोंमें अपने अस्तित्व की पहचान मे सामील पात्रों की कहानियाँ है । उनकी कहानियों में नारीजीवन के विविध रुपी चित्र है । नारी जिवन की समस्याओं को नारी के अन्तर्द्वद्वों के साथ बूनकर समाज से आग्रह किया है कि नारी के प्रति दृष्टिकोण को ही विशद नही बनाया जाय, क्रियात्मक रुप से उसके साथ सद्‌व्यवहार हो, यही नारी के प्रति चेतावनी है ।

'' स्मिता तिवारी के शब्दों मे मन्नुजी के कथा साहित्य का फलक स्वातंत्र्योत्तर भारत मे समाज की निरन्तर परिवर्तित परिस्थितियाँ है । जो कई आर्थे में विवृतियों विषमताओं और -हासों के स्त्रोत बनगयी है । इस अनुकूल तथा ह्रदयोन्मुख परिवेश में समाज, परिवर स्त्री – पुरुष सभी आदर्शों, मुल्यों, मानदण्डों, संबंधों व्यवहारों में आधारभूत परिवर्तन हुऐ है । मूल्य बदले है और बदला है जन्दगी और समाज के प्रति दृष्टिकोन । फलस्वरुप मन्नु जी की कृतियाँ, विषमताओं जटिलताओं तथा कुष्ठाओं कासही और चूमता हुआ चित्र प्रस्तुत करती है । मानसिक स्थितीयों अन्तद्वंद्वों अंतरविरोंधों कुष्ठाओं का निरुपन करने में उन्होने सिध्दहस्तता दिखाई है ।[०१]''

मन्नु भण्डारी के साहित्य में सामाजक समस्याओं को व्यक्त करते हुए उनके कथासाहित्य में कहानियों में माता पिता के तलाक में उत्पन्न बालक की मन स्थिति का चित्रण तथा त्रिकोणात्मक संबंधों का चित्रण सफलतापूर्वक हुआ है ।

'' मन्नु भण्डारी की अधिकांश कहानियाँ नारी जीवन की समस्याओं का आधार बनाकर लिखी गयी है । इनकी कहानियाँ पति पत्नी के संबाधों परिवारिक जीवन और प्रेम सम्बन्ध आदि दृष्टिकोणों को लेकर चली है । इनकी नारी देवी और दानवी के छोरो के बीच टकराती पहेली नही हाड माँस की मानवी भी है ।[२]''

अकेली कहानी भारतीय नारी के अन्तद्वंद्व की कहानी है । जिसमें वह सामाजिक तिरस्कार को झेलती रहती है । अकेली की सोमा बुआ मनोव्यथाकी प्रतिमूर्ति एक ऐसी बुढियाँ हे जो पुत्र वियोग और पति विद्रोह तथा उसके स्नेहहीन व्यवहार के बावजूद भी जीवन की एकरसता और एकाकीपन तोडने समाप्त करने के लिए इच्छित वातावरण निर्मिती में पास पडोस वालों से जूडने की भरकस कोशिश करती है । '' किसी के घर मुंडन हो, छठी हो, जनेऊ हो, शादी हो या गमी, बुआ पहूंच जाती और फिर छाती फाडकर काम करती, मानों वे

दुसरेके घर नहीं अपने ही घर में काम कर रही हो।[३]'' अपने इस प्रेम और व्यवहार से आदर सम्मान प्राप्त करती है । लेकीन नाते रिश्ते दारों के यहां बिनाबूलाए नही जाती । गिफ्ट मंगाकर,अपनी धोती सुखाकर संध्याकाल तक, गली में झाँक-झाँक कर देखती है । कि कोई बुलावा लेकर आवे लेकिन हताश होकर अंगीढी जलाने लगती है । कहानी के अंत मे अकेली परित्यक्ता सीमा बुआ का बुझे दिस से अंगीठी जलाना, असंख्य प्रतिकुल परिस्थितियों के बीच उनकी जीने की अदम्य लालसा को ही व्यंजित करता है । मन्नू भंडारी की कहानियोंमें नारी समस्या के विविध पक्षों को बडी सुक्ष्मता के साथ रेखांकित किया है । जिन साहित्यकारोंने नारी के इस रुप को उभारा है, उसमें मन्नु भण्डारी प्रमुख है । मन्नु भण्डारी के अपने कहानिसाहित्य में ऐसी नारियोंका उल्लेख किया है, ज्यो पुरुषोंकी धोकेबाजी, दृष्टता का शिकार हुयी है । अभिनेता कहानी की रंजना को दिलीप प्रेम मे धोकेबाजी करता है । यह समाज की कितनी स्त्रीयोंको ऐसा लालच दिखाकर फँसाने के लिए अलग अलग प्रकार के चाल खेलता है । नरेन भी ऐसा ही सेक्स है । जो मिताली से झुठा प्रेम जाताकर उसे फँसाता रहता है और कहता है ।

'' आज तुम्हे अंधेरे कुए से निकालकर खुली फैली दुनियाँ मे ले आया हूँ अब जानोगी की जीना क्या होता है।[४]'' इसके साथ साथ मन्नु भंडारी के स्त्री प्रबोधिनी और नशा कहानी के स्त्री पात्र भी पुरुष द्वाराछले गये पात्र है । मन्नु भण्डारी की अनेक कहानियोंमें जिंदगी से समझोता करनेवाली बातों का ही पता चलता है । जैसे एक कमजोर लडकी की कहानी की नायिका रुप अपन विवाह के न होने तथा अनचाहे विवाह के हो जाने पर घुटनपूर्ण जिंदगों जीने लगती है । और उसी स्थिति की अवगति अपने प्रेमी को पत्र के द्वारा करती है। '' साधनों का कोइ अभाव नहीं, पर जिसकी सब साथ मर गयी हो, वह क्या करे इन साधनोंको लेकर ? मेरे लिए बहुत सी पुस्तके मँगादी गई है, जिसमें इस बडे से घर में अकेली रहकर भी मेरा मन लगा रहे पर कैसे बजाऊ उन्हे कि जिसका मन ही भर गया, उसके लगने लगने का प्रश्न ही कहा उठता है भला बस अब जो है ठीक है । जिन्दगी को घसीट रही हूँ जिंदगी मुझे घसीट रही है, कुछ भी समझलेना एक ही बात है ।''[५]

मन्नू जी ने अपनी हानीयोंमें नारी पात्रेंद्वारा सामाजिक अन्याय एवं अमानवीय शोषण के खिलाफ आवाज उठाई है । उनके साहित्य की नारी बुद्धिमान तथा जागरुक है ।

स्त्री-पुरुष संबंधों का समस्याके मन्नु भण्डारी ने अपनी कहानी तीसरा आदमी मे उभारा है। ''इस कहानी मे नए जमाने के पति की मानसिक कमजोरी का एक पहलू स्पष्ट हुआ है । वस्तुतः सच्चाई कुछ भी नही होती । सब शक ही शक होता है और उसका भी कोई ठोस आधार नही होता । पर किया क्या जाय, परंतु अभी इस मानस ग्रन्थि से मुक्त नही हुआ है ।

'' इस के घर इन्सान कहानी की युवा अध्यापिकाएँ पादरियोंके दिग्भ्रमित करनेवाले सिध्दातों का विरोध करती है । मुझे कोई रोक नही सकता, जहाँ मेरा मन होगा, मै जाऊंगी मैने तुम्हारे फादर... अब वे कभी ऐसी बात नही करेंगे ।''

मन्नु भण्डारी की कहीं कहानियोमें समाजद्वारा अपेक्षित एक काम अतृप्त नारी की समस्या यहाँ आयी है । स्त्री की यौन अतृप्ती की दृष्टिसे मन्नु भण्डारी को दो कहानियों को यहा लिखा गया है । किल और कसक तथा बाँहों का घेरा किल और कसक की नायिका की इच्छा के अनुरुप उसे सुंदर पति नही मिला, इसलिए वह अपने पती के आत्मीय शेखर को ओर आकर्षित होती है । अतृप्त और दमन की कीलने उसके व्यवहार को कुष्ठित कर दिया है । बाहों का घेरा कम्मों का पति अर्थोपार्जन की जडता में सलग्न है इसलिए बाहों का घेराकिसी को बाँहो मे भरकर अपने को उसमें लय कर देने और उसको संपूर्ण पा लेने की अतृप्त दर्दभरी अभिशाप की तरह मन पर छाई रहती है । इस अतृप्ती की कुठा के मूल में कम्मों के बचपन का परिवेश है, सौतेली माँ होने के कारण उसे सगी माँ का प्यार नही मिला, वह बचपन मे भी अतृप्त ही रही । यौवन में आते ही अपने प्रेमी शेलन के बाहों के घेरेंमें बंधने से पहले ही उसकी शादी मित्तल से कर दी गई । अर्थोपार्जन में लिन उसका पती सबकुछ खरीदता और बेचता रहा परंतु कम्मों को प्यार देने के लिए उसके समय नही मिलता। यौन तृप्ती की प्यासी वह जिंदगी में बचपन से आज तक प्यासी ही नजर आती है । बेचारी क्या करें किसी के बाहो के घेरे के बिना निंद नही आती थी ।

मन्नु भण्डारीजी की कहानीयों में नारी स्वतंत्रता की भी समस्या आयी है । एक इंच मुस्कान की अमला पिरवेक्ता होने के बाद भी सामान्य नारीयों की भाँति चूपचाप शांत बैठे रहना नहीं चाहती । वह स्वतंत्र हो जाने से बहुत खुश ह । अमला अमल से कहती है इस घटना के बाद ही मैने पढाई की, संगीत सीखा घुमना फिरना सिखा, स्वतंत्र रुप से कुछ सोचना सिखा लोगों से मिलना जुलना सिखा, यों समझ लो कि, नई जिंदगी पायी।''[८]

मन्नु भण्डारी की कहानियों में अनेक समस्याओं का प्रगटन हुआ है । में हार गई की कहानी गीत का चुम्बन यह वैयक्तिक जीवन के अन्तद्वंद्वों को चित्रित करती हुयी समाप्त हो जाती है । गीत का चुम्बन की नायीका कनिका निखिल के द्वारा अनायास चूम लिए जाने पर उसे चाटा मारती है । और निखील ने माफी मांगने पर प्रसन्न हो जाती है । जब निखल मद्रास चला जाता है तो उन घटा को याद कर टुटफुटकर रोती है । एक सप्ताह बाद निखिल का पत्र आता है उसमें उसे साधारण लडकीयों से श्रेष्ठ और उच्च होकर माफी मांगती है तो उसे पढकर कनिका को क्रोध आता है । उसमें उनकी अन्तर्द्वंद्वों की अवस्था है ।

वैयक्तिक जीवन के अन्तर्द्वद्वों की इसी संग्रहकी कहानी एक कमजोर लडकी कहानी में यह अन्तर्द्वद्वों कहानी की नायीका रुप जो ललीत से प्यार करती है । ललीत के विदेश चले जाने पर उसका विवाह एक वकील के साथ हो जाता है । ललीत के विदेश से लौटने पर रुप को चलने के लिए कहता है तो रुप संकट में पडती है । किंतु शाम के पति घर आनेपर एक लडकी के भाग लाने की खबर सुनाते है । और रुप अपना इरादा बदल लेती है । इस प्रकार रुप के अन्तर्द्वद्वों को चित्रीत करती है । अतः इस प्रकार मन्नु भण्डारी के कहानियोंमें स्त्री चित्रण विस्तृत रुप में आया है । मन्नु भण्डारीजीने न केवल अपने साहित्य में स्त्री यतार्थ खिाया है । बल्की नारी शोषण का विरोध भी किया हे, उस शोषण से बाहर निकलने के लिए पात्रों को सुचित किया है।

अपने नारी पात्रों के माध्यमसें मन्नु भण्डारी नारी मुक्ति अंदोलन के नारे उछलना तो नही चाहती थी । परंतु व्यक्ति चिंतन में इस स्त्री मानसको निर्मित कर मुक्ति अंदोलन के लिए भूमि अवश्य ही प्रशस्त करना चाहती थी । अतः कहा जा सकता है कि मन्नु भण्डारी ने संघर्षशील, टुटती, बिखरती या फिर पुरों तरह से खण्डित हो चुकी स्त्री की भी थाह लेने की कोशिश की है । नारी के प्रति सहानुभूति दिखायी है ।

संदर्भ :-

१) मन्नु भण्डारी के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना – स्मिता तिवारी, पृ.१६.
२) तीन निगाहों की एक तस्वीर, मन्नु भण्डारी (अकेली) पृ.२९.
३) नई कहानी : काव्य और शिल्प, डॉ. सन्तबख्श सिंह, पृ १२०-१२१.
४) नायक, खलनायक, विदुषक आते-जाते यायावर - मन्नु भण्डारी, पृ. २१४.
५) आधुनिक हिन्दी कहानी (नारी जीवन मूल्य) – डॉ. कृष्णकांता भारद्वाज, पृ. १०९.
६) कहानी की संवेदनशीलता : सिध्दान्त और प्रयोग, डॉ. भगवानदास शर्मा पृ. २२.
७) इसा के घर इन्सान - मन्नु भण्डारी पृ १०७.
८) एक इंस मुस्कान - मन्नु भण्डारी एवं राजेंद्र यादव पृ. २५